डेनर्माक

दिनांक **7.8.10**

प्रिय अर्चना

मैंने अभी-अभी आपकी 'परिवर्तन' खत्म की। क्या खूब लिखा है आपने ! हर चरित्र के साथ आपने पूरा-पूरा इन्साफ किया। हर चरित्र इतना सशक्त और पूर्ण है कि कहानी, कहानी न लग कर अपनी जी हुई जिन्दगी सी लगती है। बहुत, बहुत मजा आया। कभी आपकी कहानी का कोई चरित्र बन कर मैं रोई, कभी हंसी। बहुत आनन्द आया। हां, एक बात और बताना चाहूंगी - पॉच-पांच घंटे लगातार बैठ कर मैंने परिवर्तन पढ़ी है। इतना अच्छा लिखने के लिये आपको बहुत-बहुत बधाई। छोटी-छोटी बारीकियां पहाड़ी जीवन की, रिश्तों की, गांधी जी के बारे, योग के बारे, बदलती हुई विचारधारायें, पीढ़ियों की असमानतायें... अपने आप में परिपूर्ण हैं। आपने और भी जो उपन्यास लिखे हैं, मुझे उनके नाम बताना। मुझे सभी पढ़ने हैं। आप अब मेरी प्रिय लेखिका हो। जब भी कुछ नया लिखोगी मुझे, जरूर पता देना। मैं बेसब्री से इन्तजार करूंगी। मेरी इमेल आइडी है : sharmaneelam@gmail.com

आपकी नीलम।

नीलम शर्मा